SEMESTER - 3

CC- 13

National Movement in India

- Unit -1 : Beginning of Indian nationalism

  Part -2

Vetted by :

प्रो० (डॉ०) सुरेंद्र कुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 09835463960

Presented by:

शिप्रा नंदन

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 08604171178

nandan.shiprabhu@gmail.com

भारतीय राष्ट्रवाद का शुभारम्भ

*मार्क्सवादी इतिहासलेखन/ दृष्टिकोण : मार्क्सवादी इतिहासकारों ने ब्रिटिश साम्राज्यवादी दृष्टि व राष्ट्रवादी दृष्टि से अलग होकर राष्ट्रवाद की अवधारणा को सामने रखा है। पहले के मार्क्सवादी विचारक जैसे की रजनी पाम दत्त,ए आर देसाई ने राष्ट्रीय आंदोलन राष्ट्रीय आंदोलन को सिर्फ वर्ग संघर्ष व साम्राज्यवादी संघर्ष-सामाजिक संघर्ष तक ही सीमित रखते हैं। वे राष्ट्रवाद को बुजुर्वावाद तक सीमित रखते हैं और कहते हैं कि वित्तीय संसाधन तक पहुंच से ही राष्ट्रीय राजनीती का रास्ता तय करने और उसको दिशा देने की शक्ति निर्धारित होती थी जबकि बाद के मार्क्सवादी इतिहासकारों जैसे विपिन चंद्र,मुखर्जी आदि ने राष्ट्रवाद के तहत विभिन्न अंतर्विरोधों,आंदोलन का वर्गीय चरित्र,कांग्रेस व अन्य पार्टी के बिच सम्बन्ध,रणनीति आदि पर ध्यान केंद्रित करके इतिहासलेखन का कार्य किया है।

राष्ट्रीय आंदोलन के सम्बन्ध में मार्क्सवादी विचारक लिखते हैं कि भारत का स्वतंत्रता संग्राम मूलतः भारतीय जनता और ब्रिटिश उपनिवेशवाद के हितों बीच आधारभूत अंतर्विरोधों का नतीजा था,जिसे राष्ट्रवादी नेताओं ने समझकर उपनिवेशवाद विश्लेषण की वैज्ञानिक पद्धत्ति को विकसित किया व उन्नीसवीं सदी में उपनिवेशवाद की आर्थिक समीक्षा करके उन्होंने जनता के मनोभाओं को समझते हुए एक सुस्पष्ट उपनिवेशवाद विरोधी विचारधारा विकसित की,जिसको राष्ट्रीय आंदोलन का आधार बनाया गया। इनका मानना था कि दादा भाई नौरोजी,सुरेन्द्रनाथ बनर्जी,तिलक,गाँधी,नेहरू तक ने स्वीकार किया कि भारत पूरी तरीके से एक सुसंगठित राष्ट्र नहीं है बल्कि राष्ट्र बनने कि प्रक्रिया में है। राष्ट्रवादी विचारधारा,राष्ट्र कि उभरती छवि,प्रक्रिया का परिणाम व उसका कारन दोनों ही है। भारतीय जनमानस

के दिमाग में जो ब्रिटिश राज कि परोपकारी नीतियां हैं उसे तोडना आवश्यक था और जो एक डर उन्होंने भारतीय जनता के मन में बिठा रखा था उसे ख़त्म करना बहुत जरूरी था। इसी को पंडित नेहरू ने `भारत की खोज` में लिखा है कि गाँधी में निर्भीकता थी,जिन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के फैलाये चतुर्दिक भय को शांत करने के लिए कहा कि `डरो मत`। इस प्रकार मार्क्सवादी इतिहासकार पूर्ण रूप से तो नहीं परन्तु आंशिक रूप से अर्थ,वर्ग,साम्राज्य,उपनिवेशवाद,राष्ट्र पर अपना दृष्टिकोण सामने रखा।

* राष्ट्रवादी इतिहासलेखन/दृष्टिकोण : राष्ट्र प्रेम की अवधारणा लगभग सभी विचारधाराओं में मौजूद थी परन्तु राष्ट्रवादी विचारकों ने माना कि भारत का अतीत गौरवशाली रहा है,जिसे पहले तो मुस्लिम आक्रांताओं ने बाद में ब्रिटिश शासकों ने धूमिल कर दिया। हालाँकि आरंभिक राष्ट्रवादी विचारकों ने एक राष्ट्रवादी विचारधारा और एक राष्ट्रवादी चेतना की श्रेष्ठता पर ध्यान केंद्रित किया जो कि उपनिवेशी शासन के साझे विरोध पर,देशभक्ति की भावना पर और भारत की प्राचीन परम्पराओं पर गर्व की भावना पर आधारित विचारधारा थी। इस विचारधारा का मत था कि भारत हमेशा से ही एक राष्ट्र रहा है और विदेशियों ने यहाँ की भोली भली जनता को ठगने कि कोशिश की है। इस विचारधारा की सीमितता यही है कि यह जाती,धर्म,समुदाय में आपसी संघर्ष को नकारता है और भारत की गौरवशाली परम्परा की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करने का कार्य किया है। इसमें राजनितिक नेतृत्व के लिए बराबर संघर्ष चलता ही रहा जो कि इसकी सीमितता को दर्शाता है।

* सबाल्टर्न विचारधारा : जनाधारित इतिहास का अध्ययन ही सबलटर्न अध्ययन कहलाया। इसके विचारकों का कहना था कि उपनिवेशवादी काल में भारतीय समाज में मुख्य अंतर्विरोध अभिजात वर्ग (भारतीय तथा ब्रिटिश राज) और निचले स्तर की जनता के बीच था। इनका मानना था की भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन जैसी कोई विचारधारा थी ही नहीं,बल्कि यहाँ तो दो स्पष्ट विचारधाराएं थी,एक निचले तबके की जनता का साम्राज्य विरोधी वास्तविक संग्राम तथा दूसरा अभिजात वर्ग का नकली राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम। सबलटर्न लेखन साम्राज्यवाद और नव- साम्राज्यवादी इतिहासकारों के समकक्ष ठहरता है,परन्तु सबलटर्न विचारधारा नव-साम्राज्यवादी,साम्राज्यवादी व अभिजात वर्ग सबको एक साथ मिलकर देखता है और यह इन्ही अर्थों में अन्य से भिन्न है। इस विचारधारा ने संगठित दलिये व राष्ट्रवादी पहल तथा गतिविधि की ऐतिहासिकता को नकारता है तथा नवचेतना को केंद्र में रखकर इतिहासलेखन का कार्य करने की कोशिश करता है परन्तु इसके लिए नए स्रोतों की तलाश जारी है और इसमें आगे दलित,नररीवादी आंदोलनों की कड़ी जुड़ती चली जाती है।

1982 में रंजीत गुहा की "सबाल्टर्न स्टडीज" का पहला खंड प्रकाशित हुआ,जिसमे लिखा है कि "भारतीय राष्ट्रवाद के इतिहासलेखन पर लम्बे समय से कुलीनवाद का वर्चस्व रहा है "। परन्तु यह विचारधारा समय के साथ बदलती जा रही है। अब यह वर्ग से हटकर समुदाय पर तथा भौतिक विश्लेषण की बजाय संस्कृति,मन,अस्मिता की विशेष महत्ता हो चुकी है,जिसके बारे में सुमित सरकार ने भी ध्यान आकर्षित करने की कोशिश की है। "तरहे नेशन एंड इट्स फ्रैगमेन्ट्स (१९९३) में पार्था चटर्जी लिखते हैं कि शिक्षित वर्ग के क्रियाकलाप दो क्षेत्रों भौतिक और आध्यात्मिकता पर आधारित रही। जहाँ आतंरिक

आध्यात्मिक क्षेत्र में इन्होने `एक आधुनिक` राष्ट्रीय संस्कृति का निर्माण के प्रयास किये परन्तु बाह्य रूप में वे पाश्चात्य संस्कृति व भौतिकता से बचे नहीं रह सके।

भारतीय राष्ट्रवाद के उदय में सहायक तत्व (पार्ट -१)

भारतीय राष्ट्रवाद के उदय के सम्बन्ध में इतिहासकारों में परस्पर वाद-विवाद होते रहे। पाश्चत्य विचारकों ने पहले तो भारत को एक राष्ट्र मांनने से ही इंकार कर दिया और भारत को मात्र "एक भौगौलिक इकाई" कि संज्ञा दी परन्तु बीसवीं सदी में जब भारत में राष्ट्रवाद कि तीव्र लहार दौड़ने लगी तब अंग्रेजी विद्वानों ने कहना आरम्भ किया कि `भारतीय राष्ट्रवाद तो अंग्रेजी राज की ही संतति थी`। आधुनिक काल में भारतीय राष्ट्रवाद की अवधारणा कही न कही फ़्रांसिसी क्रांति से प्रेरित थी,जिसे सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन ने तीव्र करने का कार्य किया और रही-सही कसर औपनिवेशिक सरकार की दमनकारी नीतियों ने पूरी कर दी। इसप्रकार भारतीय राष्ट्रवाद के उदय में कई तत्व सहायक थे,जो निम्न हैं -

१) अंग्रेजी सरकार की नीतियां : औपनिवेशिक सरकार ने भारत पर अपनी पकड़ मजबूत बनाने तथा अपने फायदे के लिए भारत का शोषण करना शुरू कर दिया तथा राजनीतिक,आर्थिक,सैनिक और बौद्धिक सभी क्षेत्रों में आधुनिक पद्धत्तियों का प्रयोग किया। हालाँकि तत्कालीन समय में आधुनिकीकरण समय की मांग थी परन्तु विदेशी सरकार ने यह मांग भारत को विकसित करने के लिए नहीं बल्कि सिर्फ अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए किया था,जिससे भारतीयों की काफी क्षति हो रही थी परन्तु इस आधुनिकीकरण ने भारतीय राष्ट्रवाद के उदय में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

२) भारत की राजनीतिक एकता : ओपनिवेशिक सरकार ने दक्षिण से लेकर उत्तर तक और पूरब से लेकर पश्चिम तक पुरे भारत पर अपना एकाधिकार स्थापित कर लिया था,जिसके कारन उनकी दमनात्मक नीतियां भी पुरे भारत में एक जैसी थी। भारतीय प्रान्त तो प्रत्यक्ष रूप में अंग्रेजों के अधीन थे ही बहरतीये रियासतें भी अप्रत्यक्ष रूप से इनके अधीन थी। जिसके कारन सभी भारतीयों की समस्याएं एक जैसी थी,जिसके कारन उनमे राजनीतिक एकता स्थापित हो गया,जिसने मानसिक एकता को बढ़ावा दिया और राष्ट्रवाद की लहार को गति देने का कार्य किया।

३) भारत में शांति तथा प्रशासनिक एकता की स्थापना: अठारहवीं सदी में जो भारत में प्रशासनिक अव्यवस्था थी,अंग्रेजों ने सुव्यवस्थित और शक्तिशाली सरकार की स्थापना के साथ ही भारत में राजनीतिक व प्रशासनिक शांति की स्थापना की,जिसे उपयोगितावादी विचारक बार -बार प्रचारित करने की कोशिश करते हैं। एक ही प्रकार का न्यायिक ढांचा,संहिताबद्ध फौजदारी तथा दीवानी कानून पुरे भारत में प्रचलित था जिसने भारत को राजनीतिक एकता भी प्रदान की और इसने राष्ट्रवाद को आगे बढ़ाने का कार्य भी किया।

४) परिवहन व संचार साधनो का विकास : अंग्रेजों ने अपनी व्यापारिक सुगमता का ध्यान रखते हुए तथा पुरे भारत पर प्रशासनिक पकड़ मजबूत करने के लिए तीव्र गति के परिवहन व संचार के साधनों का वीएक्स किया। पक्की सडकों के निर्माण के कारण प्रान्त व गांव एक दूसरे से जुड़ गए और इस वीएक्स

में रेलवे ने चार चाँद लगा दिया। १८५३ से ही देश में रेललाइन बिछाने का अम्बार लग गया और प्राप्त आंकड़ों के मुताबिक १८८० तक लगभग २५०० मील लम्बी १९०० तक २५हज़ार लम्बी रेल लेने बिछ गई थीं। हालाँकि रेलवे के विकास ने बहरतियों पर लाभ के बनिस्पत हानि ही की परन्तु इसने राष्ट्रवाद की लहर को तीव्रता दी। वहीँ आधुनिक डाक-व्यवस्था,बिजली के तार ने देश को समेकित करने का कार्य किया। डाक व्यवस्था ने देश के सामाजिक,बौद्धिक तथा राजनीतिक जीवन में एक परिवर्तन पैदा कर दिया। संदेशों के शीघ्र भेजने में बिजली के तारों ने क्रांति ला दी जिससे भारत के विभिन्न भागों में रहने वाले लोगों के बीच समन्वय स्थापित हुआ और राष्ट्रवाद को बढ़ावा मिला।